भारत के विकास में भारतीय डायसपोरा की भूमिका

केतुलभाई किरीटभाई परमार

सारांश

मानव संसाधन गतिशील हे आज की वैश्वीकृत दुनिया की एक अनिवार्य विशेषता है जहां एकीकृत विश्व बाजार, नेटवर्क और प्रौद्योगिकियां सभी श्रम, छात्रों, पेशेवरों और परिवारों के बढ़ते आंदोलन में योगदान दे रहे हैं। आज के प्रवासी कल के डायस्पोरा हैं। विश्व का सबसे बड़ा डायसपोरा भारतवंशियों का है। करीब तीन करोड़ की संख्या वाला यह डायसपोरा विश्व के अनेक देशों में फैला हुआ है। भारतीय समाज की ही तरह यह डायसपोरा बहुधर्मी, बहुजातीय और बहुभाषी है। 48 देशों में रह रहे प्रवासियों की जनसंख्या करीब 2 करोड़ है। इनमें से 11 देशों में 5 लाख से ज्यादा प्रवासी भारतीय वहां की औसत जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं और वहां की आर्थिक व राजनीतिक दशा व दिशा को तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यहां उनकी आर्थिक, शैक्षणिक व व्यावसायिक दक्षता का आधार काफी मजबूत है। वे विभिन्न देशों में रहते हैं, अलग भाषा बोलते हैं परन्तु वहां के विभिन्न क्रियाकलापों में अपनी महती भूमिका निभाते हैं। प्रवासी भारतीयों को अपनी सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण बनाए रखने के कारण ही साझा पहचान मिली है और यही कारण है जो उन्हें भारत से गहरे जोड़ता है।

महत्वपूर्ण शब्द : डायसपोरा, भारतीय डायसपोरा,

१. प्रस्तावना

चीन के बाद भारत दूसरा ऐसा देश हे जन्हा पे दुनियाकी सबसे ज्यादा आबादी पाई जाती हे। यु.ऍन. के द्वारा दिए गए आंकदोके मुताबिक भारतमें आज तक़रीबन 1,366,417,754 लोग रहते हे। आज हर एक आदमी अपनी प्राथमिक जरूरियातो को पूरा करने के लिए, अच्छी पढाई के लिए, अच्छी नोकरी के लिए ज्यादातर लोग हस्तांतरण करते हे। इस से आदमी अपना घर, परिवार, समाज और गाँव को आगे लाने की कसीस करता हे। आज ये हस्तांतरण इतने हद तक बढ़ गया हे की लोक पढाई, पढाई और बिजनेस करने के लिए विदेशोमें जाने लगे हे।

जो लोग भारत छोड़कर विश्व के दूसरे देशों में जा बसे हैं उन्हे प्रवासी भारतीय कहते हैं । ये विश्व के अनेक देशों में फैले हुए हैं। 48 देशों में रह रहे प्रवासियों की जनसंख्या करीब 2 करोड़ है। इनमें से 11 देशों में 5 लाख से ज्यादा प्रवासी भारतीय वहां की औसत जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं और वहां की आर्थिक व राजनीतिक दशा व दिशा को तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यहां उनकी आर्थिक, शैक्षणिक व व्यावसायिक दक्षता का आधार काफी मजबूत है। वे विभिन्न देशों में रहते हैं, अलग भाषा बोलते हैं परन्तु वहां के विभिन्न क्रियाकलापों में अपनी महती भूमिका निभाते हैं। प्रवासी भारतीयों को अपनी सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण बनाए रखने के कारण ही साझा पहचान मिली है और यही कारण है जो उन्हें भारत से गहरे जोड़ता है।

इतिहास को देखा जाए तो रोमानी लोगों या जिप्सियों की बड़ी संख्या के भारत से जा कर दूसरे देशों में बसने से भारतीय डायसपोरा की शुरुआत होती है। भाषाई और जेनेटिक प्रमाण बताते हैं कि जिप्सियों का उद्गम मध्य भारत में है। ग्यारहवीं सदी में वे यहीं से उत्तर-पश्चिम की तरफ़ बढ़े और ईसा से ढाई सौ साल पहले उन्होंने पंजाब के इलाके में

कई सदियाँ बितायीं। 500 से 1000 ईस्वी के बीच कई लहरों में रोमानी लोगों ने दुनिया के पश्चिमी हिस्से की तरफ़ गमन किया। मध्य एशिया के डोम और भारत के बंजारे रोमानी समाज के बचे हुए प्रतिनिधि ही माने जाते हैं। चोल राजाओं और बौद्धों के सैनिक अभियानों के कारण भारतीय प्रभाव दक्षिण-पूर्वी एशिया तक पहुँचा और सुमात्रा, मलय द्वीप और बाली में भारतीय डायसपोरा का आधार बना। सोलहवीं सदी के मध्य में भारतीय व्यापारी मध्य एशिया और फ़्रांस के इलाकों में पहुँचे और उनका एक हिस्सा वहीं बस गया। अट्ठारहवीं सदी तक मास्को और सेंट पीटर्सबर्ग में भी भारतीय मौजूदगी दिखाई पड़ती है। उन्नीसवीं सदी से ब्रिटिश राज की समाप्ति तक भारतीय श्रमिकों को करारबंद करके बँधुआ मज़दूरों के रूप में मॉरीशस, गुयाना, कैरीबियाई द्वीपों, फ़ीज़ी, सूरीनाम और पूर्वी अफ़्रीका के बाग़ानों में काम करने के लिए ले जाया जाने लगा। चूँकि ब्रिटिश संसद ने 1834 में दास प्रथा का उन्मूलन कर दिया था, इसलिए इन बागानों में श्रमिकों की कमी पड़ने लगी थी। भारतीय श्रमिकों ने इनकी जगह ली। अंग्रेज़ उपनिवेशवादी भारतीय श्रमिकों को श्रीलंका, बर्मा और ब्रिटिश मलाया के चाय बागानों में काम करने के लिए भी ले गये।

स्वतंत्रता के बाद अमेरिकी और युरोपीय अर्थव्यवस्थाओं द्वारा दिये गये अवसरों का लाभ उठाने के लिए डॉक्टरों और अन्य पेशों में प्रशिक्षित भारतवासी विदेश गये। सत्तर के दशक में मध्य-पूर्व के देशों में आये तेल बूम से पैदा हुए अवसरों का लाभ उठाने के लिए बड़ी संख्या में भारतवासी खाड़ी देशों में काम करने के लिए गये। नब्बे के दशक में आये सॉफ्टवेयर बूम के चलते अमेरिकी और पश्चिमी देशों की अर्थव्यवस्थाओं ने भी बहुत से प्रशिक्षित भारतीयों को अपनी ओर आकर्षित किया।

२. भारत के विकास में भारतीय डायसपोरा की भूमिका

भारत ने हाल ही में 21-23 जनवरी, 2019 से 15 वें प्रवासी भारतीय दिवस (PBD) को वाराणसी, भारत में मनाया ताकि दुनिया भर में भारतीय प्रवासी भारतीयों के प्रयासों को सराहा जा सके।

एक यादगार घटना के रूप में, पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में 2003 में PBD वापस शुरू हुआ। प्रत्येक वर्ष के 7-9 जनवरी को इस कार्यक्रम को मनाने के लिए चुना गया था क्योंकि 9 जनवरी को भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण तारीख माना जाता है - इस दिन महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे थे - इस दिन को मनाने का निर्णय लिया गया था दुनिया भर में भारतीय डायस्पोरा के नाम पर।

इस वर्ष भी, भारत ने पीबीडी मनाया, लेकिन विभिन्न तिथियों के कारण, भारत के प्रवासी भारतीयों द्वारा कुंभ मेले और भारत में गणतंत्र दिवस समारोह में शामिल होने के अनुरोध के कारण। इस वर्ष के आयोजन का विषय "न्यू इंडिया के निर्माण में भारतीय प्रवासी की भूमिका" के रूप में रखा गया था।

"पीएम नरेंद्र मोदी का विदेशी भारतीय समुदाय के प्रति एक मजबूत संबंध है और यह उनकी हर विदेश यात्रा के गवाह हैं जहां वे बड़े पैमाने पर भारतीय समुदाय के साथ बातचीत करने की पूरी कोशिश करते हैं।"

ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्हें पता है कि भारत के विकास के लिए भारतीय प्रवासी कितना महत्वपूर्ण है। इसकी वास्तविक क्षमता का एहसास करने से पहले, "भारतीय प्रवासी" शब्द को समझना जरूरी है। इंडियन डायस्पोरा उन लोगों को संदर्भित करता है जो उन क्षेत्रों से चले गए जो वर्तमान में भारतीय गणराज्य की सीमाओं के भीतर हैं और इसमें एनआरआई (अनिवासी भारतीय) और पीआईओ (भारतीय मूल के व्यक्ति) दोनों शामिल हैं।

भारतीय डायस्पोरा भारत के विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, यह राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि है। जहां-जहां प्रवासी भारतीय बसे वहां उन्होंने आर्थिक तंत्र को मजबूती प्रदान की और बहुत कम समय में अपना स्थान बना लिया। वे मजदूर, व्यापारी, शिक्षक अनुसंधानकर्ता, खोजकर्ता, डाक्टर, वकील, इंजीनियर, प्रबंधक, प्रशासक आदि के रूप में दुनियाभर में स्वीकार किए गए। प्रवासियों की सफलता का श्रेय उनकी परंपरागत सोच, सांस्कृतिक मूल्यों और शैक्षणिक योग्यता को दिया जा सकता है। कई देशों में वहां के मूल निवासियों की अपेक्षा भारतवंशियों की प्रति व्यक्ति आय ज्यादा है। वैश्विक स्तर पर सूचना तकनीक के क्षेत्र में क्रांति में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जिसके कारण भारत की विदेशों में छवि निखरी है। प्रवासी भारतीयों की सफलता के कारण भी आज भारत आर्थिक विश्व में आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है।

१.सामाजिक और सांस्कृतिक विकासमें भारतीय डायसपोरा की भूमिका

दुनिया भर में भारत देश अगर जो पहेचाना जाता हे तो वो अपनी संस्कृति के बदौलत पहचाना जाता हे। भारतीय संस्कृति दुनिया में सबसे पुराणी संस्कृति हे। इस का श्रेय जाता हे भारत के रित-रिवाज। दिनिया में किसी भी कोने में अगर कोई भारतीय रहेता हो तो वो अपनी संस्कृति को कभी नहीं भूलता। इसी लिए विदेश मंत्री सुष्मा स्वराजने कहा था की जब भी कभी कोई कुदरती आपत्ति या फिर ऐसी कोई भी विपदा आई हो तब भारतीय प्रवासियोंने हमेशा हमको मदद की हे।

NRI भारत में कई गैर-सरकारी संगठनों के साथ आगे आए, और विकासात्मक, शैक्षिक, सामाजिक परियोजनाओं में मदद कर के प्रत्यक्ष रूप से वो सहभागी होते हे। शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और विकासात्मक गतिविधियों जैसे जल प्रबंधन, ग्रामीण विकास और स्वयं सहायता कार्यक्रमों आदि को प्रोत्साहित करने के लिए कई गैर सरकारी संगठनों को पंजीकृत किया है। इस तरह वे भारत में सामाजिक और पर्यावरणीय समस्याओं में भी सहायता कर रहे हैं।

२.राजनीतिक विकासमें भारतीय डायसपोरा की भूमिका

भारतीय डायसपोरा न केवल सामाजिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि राजनीतिक दृष्टि से भी उसका महत्व विश्व के दूसरे डायसपोरा समाजों से अधिक है। उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन का इतिहास गवाह है कि दक्षिण अफ़्रीका के भारतीयों के बीच ही गाँधी ने अहिंसक आंदोलन और सत्याग्रह के सबसे पहले प्रयोग किये थे। श्रीलंका में हिंसक अलगाववादी आंदोलन चलाने वाला ईलम संगठन भारतवंशी तमिलों का ही है। उत्तरी अमेरिका के भारतीय भारत में चलने वाली वामपंथी (पीपुल्स एसोसिएशन ऑफ़ नॉर्थ अमेरिका के भारत के नक्सलवादी गुटों के साथ संबंध रहे हैं) और दक्षिणपंथी (अमेरिका, ब्रिटेन और कनाडा के प्रवासी भारतीय विश्व हिंदू परिषद् के हिंदुत्ववादी कार्यक्रम का समर्थन करते रहे हैं) वे दोनों तरह की राजनीति से जुड़े हुए हैं। प्रवासी भारतीय हिंदू धर्म के भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया और उसके माध्यम से उसमें आने वाले परिवर्तनों के भी ज़िम्मेदार माने जाते हैं।

भारत पर सालों साल राज करने वाले ब्रितानियों के बारे में कहा जाता था कि अंग्रेजों का सूरज कभी नहीं डूबता, अर्थात उनकी सल्तनत इतने सारे देशों मे थी कि कहीं न कहीं सूरज दिखाई ही देता था। आज हम हिन्दुस्तानी गर्व से कह सकते हैं कि भारतवंशियों का सूरज कभी भी नहीं डूबता है। विश्व के कमोबेश हर देश में भारतीय मिल जायेंगे तो अपनी सफलता के परचम लहरा रहे हैं। भारतवंशियों के अंदर कोई तो खूबी होगी जो कि विदेशों की धरा में ये अपने आप को संजोकर रखे हुए हैं। परदेस में परचम फहराने वाले भारतियों में अमेरिका में लुइसियाना के गर्वनर बाबी जिंदल, न्यूजीलेंड के गर्वनर जनरल आनंद सत्यानंद, जाने माने ब्रिटिश सांसद कीथ वाज, लिबरल डोमोक्रेटिक पार्टी के अध्यक्ष लार्ड ढोलकिया, सुरीनाम के उपराष्ट्रपति राम सर्दजोई, सिंगापुर के महामहिम राष्ट्रपति एस.आर.नाथन, तीसरी बार गुयाना के महामहिम राष्ट्रपति बने भरत जगदेव के अलावा मरीशस के महामहिम राष्ट्रपति अनिरूध्द

जगन्नाथ, मरीशस के प्रधानमंत्री नवीन रामगुलाम, 1999 में फिजी के प्रधानमंत्री महेंद्र चौधरी, केन्या के प्रथम उपराष्ट्रपति जोसेफ मुरूम्बी, त्रिनिदाद एवं टौबेगो की पहली महिला अटार्नी जनरल कमला प्रसाद बिसेसर के नाम प्रमुख हैं।

३.आर्थिक विकास में भारतीय डायसपोरा की भूमिका

अर्थव्यवस्था की सुस्ती के दौर में, भारत बुरे दौर से गुजर रहा है और उसकी मौद्रिक स्थिति गंभीर रूप से प्रभावित है। मुद्रास्फीति की दर अधिक है और लोग अपने दैनिक जीवन का प्रबंधन करने में असमर्थ हैं। इस संदर्भ में भारत सरकार को करोड़ों अनिवासी भारतीयों से भारत में निवेश के माध्यम से संकट के समाधान की बहुत उम्मीदें हैं। 1.03 बिलियन की भारत की 25% से अधिक जनसंख्या 'अत्यधिक गरीबी' समूह के अंतर्गत आती है। एक और 40% आबादी गरीबी 'की श्रेणी में आती है, जो शहरी मध्यम वर्ग' के रूप में लगभग 30% है। लगभग 300 मिलियन लोगों के इस शहरी मध्यम वर्ग 'ने अभी-अभी अपने उपभोक्ता सामान को खर्च करना शुरू किया है। हालांकि भारत के पास पर्याप्त प्राकृतिक संसाधन हैं लेकिन उनका दोहन करने और अर्थव्यवस्था की प्रगति के लिए पर्याप्त पूंजी नहीं है। इसके लिए, भारत बाहरी निवेशों पर निर्भर करता है।

आर्थिक विकास में सबसे बड़ा तरीका नियमित प्रेषण के माध्यम से है। अप्रैल में जारी विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत 2015 में अनुमानित $ 69 बिलियन के साथ दुनिया का सबसे बड़ा प्रेषण प्राप्त करने वाला देश था। यह भारत के सकल घरेलू उत्पाद का 3.4 प्रतिशत है, एक अद्भुत गुणक है, क्योंकि सिर्फ 1 प्रतिशत नागरिकता, जो देश में भी नहीं रहती है, देश के धन में अपनी उचित हिस्सेदारी का तीन गुना से अधिक योगदान करती है। भले ही एनआरआई का योगदान दिखाई नहीं दे रहा है लेकिन वे भारत में विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से अपने देश की मदद कर रहे हैं। कई रिपोर्टों से पता चलता है कि एनआरआई भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, बाजार विकास (आउटसोर्सिंग), प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, दान, पर्यटन, राजनीतिक योगदान और ज्ञान के अधिक प्रवाह के प्रमुख स्रोत हैं।

संदर्भ साहित्य

1. जी. ओंक (2007). ग्लोबल डायसपोरा : ट्रैरजेक्टरीज़ ऑफ़ माइग्रेशन ऐंड थियरी, एमस्टर्डम युनिवर्सिटी प्रेस, 2007
2. डायसपोरा : द नैशनल पोर्टल ऑफ़ गवर्नमेंट ऑफ़ इण्डिया, (एचटीटीपी://इण्डिया.जीओवी.इन/ओवरसीज़/डायसपोरा/एनआर आई.पीएचपी)
3. http://in.jagran.yahoo.com/pravasi/index.php?category=4
4. India and its Dia18". Ministry of Overseas Indian Affairs. अभिगमन तिथि 2012-09-12.
5. POPULATION OF NON-RESIDENT Indians (NRIs): COUNTRY WISE" (PDF). Ministry of Overseas Indian Affairs. 9 April 2012. अभिगमन तिथि 28 May 2012
6. हिन्दी का प्रवासी साहित्य" (पीएचपी). ईविश्वा. अभिगमन तिथि २ अप्रैल २००९.
7. Developing a knowledge base for policymaking on India-EU migration, CARIM-India Research Report 2012/25
8. "India's Growing Power Makes it a Global Player: Top US Admiral', Times of India, 10 July 2009.